

तृतीयः पाठः सोमप्रभम्

प्रस्तुत पाठ प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा रचित 'प्रेक्षणसप्तकम्' नामक नाट्य-संग्रह से सम्पादित कर लिया गया है। यहाँ दहेज प्रथा के निन्दनीय रूप का उल्लेख किया गया है। अपनी माता की रक्षा के लिए बालिका सोमप्रभा द्वारा किया गया प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

(ततः प्रतिशति करतलाभ्यां चक्षुषी मार्जयन्ती पञ्चवर्षदेशीया बालिका सोमप्रभा)

विमला - अये जागरिता! त्वरस्व तावत्। परिहीयते विद्यालयगमनवेला।

सोमप्रभा - अम्ब! अद्य न गमिष्यामि विद्यालयम्।

विमला - (हस्तेन सोमप्रभां गृहीत्वा) अये किमेतत् कथयसि। विद्यालयस्तु गन्तव्य एव प्रतिदिनम्।

(सोमप्रभायाः प्रस्थानम्)

श्वश्रूः - विमले! अयि दुष्टे! कुत्र मृतासि? कियतः कालात् शब्दापयामि?

विमला - (सकरुणं निशम्य) इयं मम श्वश्रूः सदैव मर्मघातिभिः कटुवचनैराक्षिपति माम्। (उच्चैः स्वरेण) अम्ब! इयमागच्छामि। किं करणीयम्? (परिक्रामति)।

(ततः प्रविशति साटोपं कोपं निरूपयन्ती श्वश्रूः)

विमला - अम्ब! किमादिशसि?

श्वश्रूः - (विडम्बयन्ती) किमादिशसि? किमिदानीमपि महादेव्याः प्रभातकालो न सञ्जातः?

विमला - प्रातःकालिकं कार्यजातमेव सम्पादयामि।

श्वश्रूः - प्रातःकालिकं कार्यजातं सम्पादयसि। इदानीमपि चायपेयस्य नास्ति कापि कथा। तव पिता आगत्य साधयिष्यति किं चायं ... येन काकिणी अपि न दत्ता ...

विमला - मम पितृपादम् किमर्थं कदर्थयसि अम्ब! यत्किमपि कथनीयं मां प्रत्येव कथय।

श्वश्रूः - (सभ्रूभङ्गं सभुजक्षेपं च) (अय् हय्) शृणुत अस्याः दुष्टायाः अधरोत्तरम्। एतावानेव प्रियो यदि पिता तर्हि तत्रैव गत्वा कथं न मृता पितुर्गृहे ...?

- विमला** - स तु मां नेतुमागतः श्रावणे विगते। भवतीभिरेव ...
- श्वश्रूः** - अयि दुष्टे! वेतनस्य गर्वमुद्वहसि? अतिमात्रं गर्वितासि त्रिचतुरान् पणकानर्जयित्वा आनयसीत्येतेन। निष्ठीवनं करोमि तव पणकेषु। धुः! किं मन्यसे त्वम् अर्जयित्वा धनमानयसि? किं तव धनं तत्? तव पिता यावन्तं यौतकराशिं प्रतिज्ञातवान् तावतोऽर्धमेव समर्पितवान्।
- विमला** - अहो नृशंसता युष्माकम्। अहो लोलुपता ...
- श्वश्रूः** - अये! एतावत्तव साहसम् त्वं मामाक्षिपसि। नेत्रे दर्शयसि माम्।
(श्वसुरः प्रविश्य)
- श्वसुरः** - किं जातम्? कोऽयं कलहाडम्बरः प्रातः कालादेव? प्रातःकालिकं चायमपीदानीं यावन्न लब्धम् ...
- श्वश्रूः** - का कथा चायपानस्य। त्रोटितानि अनया दुष्टया चायभाजनानि। न मया किमपि भणितम्, तथापि अधिक्षिपति मामियम्। वयं नृशंसाः, वयं लोलुपाः, वयं राक्षसाः।
- श्वसुरः** - एतत्सर्वं कथितमनया?
- विमला** - न मयैतत् कथितं पितः!
- श्वश्रूः** - पश्यत पश्यत अस्या दौरात्म्यं दुर्भगायाः। किं किं दुष्कृत्यमियं न करोति? सम्मुखमेव प्रत्युत्तरमपि ददाति, जिह्वां चालयतीयं मत्समक्षम्।
- श्वसुरः** - (सक्रोधम्) अहो अस्या दुस्साहसम्!
(श्वसुरः श्वश्रूश्च तां न पश्यतः उभौ सक्रौर्यं सहिंस्रभावं विमलां निभालयन्तौ तामुपसर्पतः। सोमप्रभा प्रविश्य एतत् पश्यति)
- विमला** - अम्ब! पितः! न मया किमपि अपराद्धं सत्येन शपामि। किमिति यूयं मामेवं पश्यथ? नहि, नहि, न मां ताडयितुमर्हन्ति भवन्तः ... । (उभौ जिघांसया बलाद् विमलां गृहीत्वा प्रधर्षयतः)
- सोमप्रभा** - (भयग्रस्तेनातिमन्दस्वरेण) - अम्ब ... अम्ब ...
(श्वसुरौ तामपश्यन्तौ विमलां कर्षतः)

श्वश्रूः

- नयतु एनां महानसम् इयं तत्रैव ज्वलतु।
(सोमप्रभा सहसा प्रधावन्ती निष्क्रामति। विमला आत्मत्राणाय सप्राणपणं प्रयतते, नेपथ्ये गीयते)



क्षणे क्षणे प्रवर्धते धनाय हिंस्रता खलै-
र्विलोप्यतेऽतिनिर्दयं च जन्तुभिर्मनुष्यता।
विभाजितं जगद्विधा निहन्यते च घातकै-
रतीव दैन्यमागतास्ति साधुता मनुष्यता॥

(विमलायास्तीव्रशचीत्कारः। पुरुषनिरीक्षकेण सह सोमप्रभा प्रविशति)

पुरुषनिरीक्षकः

- (उपसृत्य) हे! किं क्रियते, किं प्रचलत्यत्र? मुञ्चत एनाम्।

श्वश्रूः

- (सम्भ्रमम्) महाभाग! न किमप्यत्याहितम्। इयमस्माकं साध्वी स्नुषा रुग्णा वर्तते। एनामुपचरामः।

निरीक्षकः – उपचारः क्रियते! युवयोरुपचारमहं करिष्ये। सर्वमहं जानामि। (सोमप्रभां निर्दिश्य)
सर्वं निवेदितमनया बालिकया।
(श्वश्रूः श्वसुरश्च विमलां मुञ्चतः)



- विमला** – (सकष्टं सोमप्रभामुपसृत्य) – पुत्रि! त्वम् ... कथं त्वमिह ...
- सोमप्रभा** – अम्ब! मम उपानहौ त्रुटिते, त्रुटितौ, पुस्तकमञ्जूषा च त्रुटितेति अध्यापिका मां कक्षाया निष्कासितवती। त्वया उक्तमासीत् – विद्यालयाद् गृहमेव अविलम्बमागन्तव्यम्। अतोऽहं गृहमागता। (रोदिति)
- विमला** – मा रोदीः पुत्रि! सर्वमुपपन्नं भविष्यति।
- सोमप्रभा** – अत्रागत्य मया दृष्टं यत् पितामहः पितामही च त्वां मारयतः। अतोऽहं धावं धावं स्थानकं गता। पुरुष- निरीक्षकाय मया निवेदितम् ...
- विमला** – (सवाष्पं सगद्गदं कण्ठमालिङ्ग्य सोमप्रभाम्) त्वया अहं त्राता। महतः सङ्कटात् त्वं मामुद्धृतवती। प्रियं कृतं त्वया मे।

❖ शब्दार्थाः ❖

चक्षुषी	नेत्रे	दोनों आँखें
मार्जयन्ती	मार्जनं कुर्वन्ती	साफ करती हुई
त्वरस्व	शीघ्रतां कुरु	शीघ्रता करो
परिहीयते	विलम्बो भवति	देर हो रही है
श्वश्रूः		सास
श्वसुरः		श्वसुर
शब्दापयामि	आकारयामि	आवाज देती हूँ / देता हूँ
आक्षिपति	आक्षेपं करोति	ताना दे रही है
मर्मघातिभिः	मर्म हन्ति इति	मर्मभेदी (शब्दों से)
	मर्मघाती तैः मर्मघातिभिः	
साटोपम्	गर्वेण सहितम्	गर्व दिखाती हुई
कोपम्	क्रोधम्	क्रोध को
कदर्थयसि	निन्दयसि	निन्दा करती हो
पणकान्		पैसे
निष्ठीवनम्	थूकृतम्	थूकना
यौतकराशिम्	कन्याशुल्कम्	दहेज की राशि
नृशंसता	निर्दयता	निर्दयता
लोलुपता	लोभप्रवृत्तिः	लोभ की प्रवृत्ति
त्रोटितानि	भञ्जितानि	तोड़ डाला गया
भाजनानि	पात्राणि	पात्र (बर्तन)
भणितम्	कथितम्	कहा गया
दौरात्म्यम्	दुष्टात्मत्वम्	दुष्टता
सक्रौर्यम्	सनृशंसत्वम्	क्रूरता के साथ
जिघांसया	हन्तुम् इच्छा जिघांसा	मारने की इच्छा से
	तया जिघांसया	
निभालयन्तौ	पश्यन्तौ	देखते हुए (दो)
प्रधर्षयतः	संघट्टयतः	खींचते हैं
कर्षतः	प्रसह्य नयतः	बलपूर्वक ले जाते हैं
महानसम्	पाकशालाम्	रसोई घर में

खलैः	दुष्टैः	दुष्टों द्वारा
मुञ्चत	त्यजत	छोड़ो
अत्याहितम्	अहितम् अकरवम्	अहित किया
स्नुषा	पुत्रवधूः	बहू
रुग्णा	अस्वस्था	बीमार
उपानहौ	पदत्राणे	जूते (दो)
मञ्जूषा	पिटकम्	पेटी (बैग)
उपपन्नम्	उचितम्	सही, ठीक-ठाक
पितामहः	पितृजनकः	दादा
पितामही	पितृजननी	दादी
स्थानकम्	रक्षिस्थानम्	थाना



अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) अध्यापिका सोमप्रभां कक्षायाः किमर्थं निष्कासितवती?
- (ख) विद्यालयात् गृहम् आगत्य सा (सोमप्रभा) किम् अपश्यत्?
- (ग) विमलायाः श्वसुरः श्वश्रूः च ताम् कुत्र किमर्थञ्च नयतः?
- (घ) सोमप्रभा कथम् मातुः त्राणम् अकरोत्?
- (ङ) सोमप्रभायाः आयुः कति वर्षाणि आसीत्?
- (च) अस्मिन् नाटके पुरुषनिरीक्षकस्य (आरक्षणः) कर्तव्यपरायणता वर्णिताऽस्ति भ्रष्टाचारपरायणता वा?

2. निम्नलिखितस्य श्लोकस्य आशयं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत-

क्षणे-क्षणे प्रवर्धते धनाय हिंस्त्रताखलै-
 विलोप्यतेऽतिनिर्दयं च जन्तुभिर्मनुष्यता।
 विभाजितं जगद्द्विधा निहन्यते च घातकै-
 रतीव दैन्यमागताऽस्ति साधुता मनुष्यता॥

3. (क) अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं पाठात् चित्वा लिखत-

- (i) पुत्रवधू -
- (ii) पदत्राणे -

- | | | |
|--------------------|---|-------|
| (iii) पाकशालाम् | - | |
| (iv) शीघ्रं कुरु | - | |
| (v) पात्राणि | - | |
| (vi) हन्तुम् इच्छा | - | |

(ख) सन्धिं कुरुत-

- | | | |
|---------------------|---|-------|
| (i) कलह + आडम्बरः | - | |
| (ii) प्रचलति + अत्र | - | |
| (iii) न + अस्ति | - | |
| (iv) प्रति + एव | - | |
| (v) मया + एतत् | - | |
| (vi) तत्र + एव | - | |

4. उदाहरणमनुसृत्य प्रकृतिप्रत्ययसंयोगं कुरुत-

- | | | |
|---------------------------------|---|----------|
| यथा- आ + गम् + ल्यप् | - | आगत्य |
| सम् + पूज् + ल्यप् | - | सम्पूज्य |
| (क) अभि + गम् + ल्यप् | - | |
| (ख) वि + हा + ल्यप् | - | |
| (ग) निर् + गम् + ल्यप् | - | |
| (घ) वि + हस् + ल्यप् | - | |
| (ङ) प्र + क्लृप् (कृप्) + ल्यप् | - | |
| (च) सम् + बुध् + ल्यप् | - | |

5. अधोलिखितेषु पदेषु उपसर्गपदं चिनुत-

- | | | | | | |
|----------------|---|-------|-------------------|---|-------|
| (क) परिहीयते | - | | (ख) सञ्जातः | - | |
| (ग) अधिक्षिपति | - | | (घ) प्रत्युत्तरम् | - | |
| (ङ) प्रवर्धते | - | | (च) विलोप्यते | - | |
| (छ) उपचरामः | - | | (ज) उद्धृतवती | - | |

6. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) अद्य विद्यालयम् न गमिष्यामि।
- (ख) अनया दुष्टया चायभाजनानि त्रोटितानि।
- (ग) विमला आत्मत्राणाय प्रयतते।
- (घ) त्वम् सङ्कटात् माम् उद्धृतवती।
- (ङ) त्वम् वेतनस्य गर्वम् उद्वहसि।

7. घटनाक्रमानुसारं वाक्यानि पुनः लिखत -

- (क) सोमप्रभा आरक्षणः समीपम् अगच्छत्।
- (ख) विमलायाः श्वश्रूः तां कटुवचनैः आक्षिपति।
- (ग) सा आत्मत्राणाय प्रयत्नं करोति।
- (घ) विमलायाः श्वश्रूः श्वसुरः च तां ज्वालयितुं महानसं नयतः।
- (ङ) पुरुषनिरीक्षकः सोमप्रभया सह आगच्छति तस्याः त्राणं करोति।

❖ योग्यताविस्तारः ❖

परिचय-अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में अनेक रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों का उद्घाटन करते हुए अन्याय, शोषण और दमन के प्रतिकार के लिए आह्वान कर रहे हैं। स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार और नारी स्वातन्त्र्य के भाव का चित्रण **अभिराज राजेन्द्र मिश्र** के एकांकी नाटक 'वैधेयविक्रमम्' में मिलता है जो उनके एकांकी संग्रह 'चतुष्पथीयम्' में प्रकाशित है। **हरिदत्त शर्मा** का एकांकी 'वधूदहनम्' (त्रिपताकम्, 1987 में संकलित) भी इसी समस्या पर केन्द्रित है। **राधावल्लभ त्रिपाठी** की **जनतालहरी**, **रोटिकालहरी** आदि काव्य तथा **प्रेक्षण- सप्तकम्** के अन्य एकांकी भी इस दृष्टि से पठनीय हैं।

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी का जन्म 15 फरवरी 1949 ई. को मध्यप्रदेश के राजगढ़ जनपद में हुआ। आप डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में आचार्य एवं विभागाध्यक्ष हैं। आधुनिक संस्कृत साहित्य में आपका महनीय योगदान है।

❖ भाषिकविस्तारः ❖

शब्दापयामि - "आकारयामि" - बुलाता हूँ - इस अर्थ में शब्दापयामि शब्द आया है। हिन्दी में इसका बड़ा अच्छा प्रयोग है - 'आवाज देता हूँ।'

पितृपादम् - पा धातु में तुच् प्रत्यय जुड़ने से पिता शब्द बना। पाति-रक्षति इति पिता अर्थात् जो रक्षा करता है वह पिता है। आदर के लिए पादम् शब्द जोड़कर पितृपादम् शब्द बनता है जिसका अर्थ है पूज्य पिताजी।

- नृशंसता** - नृ + शस् + अण् - नृशंस शब्द बना और इसकी भाववाचक संज्ञा नृशंसता है। इसका अर्थ है निर्दयता - कठोरता, क्रूरता।
- आत्मत्राणाय** - अपने त्राण के लिए - अपने बचाव के लिए। त्रै + क्त और 'त' का नत्व/णत्व होने पर त्राणम् शब्द बनता है। आत्मनः त्राणाय - यहाँ षष्ठी तत्पुरुष समास है।
- निरीक्षकेण** - निर् + ईक्ष् + ल्युट् में 'अ' करके निरीक्षक शब्द बनता है जिसका अर्थ है देखने वाला, विचार करने वाला, अवलोकन करने वाला। इसमें तृतीया विभक्ति का प्रयोग होने पर निरीक्षकेण शब्द बना।
- साध्वी** - साधु शब्द में डीप् प्रत्यय करके साध्वी शब्द निष्पन्न होता है। इसका अर्थ है-सती स्त्री या पतिव्रता स्त्री।
- उपचारः** - 'उप' उपसर्ग पूर्वक च् धातु से घञ् प्रत्यय करने पर उपचारः शब्द निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है - सेवा - शुश्रूषा, सत्कार, चिकित्सा आदि।
- निष्कासितवती** - निस् उपसर्गपूर्वक 'कस्' धातु से णिच् और क्तवतु प्रत्यय से निष्कासितवान् शब्द बना। स्त्रीलिङ्ग में यही निष्कासितवती हो गया।
- साटोपम्** - (सह आटोपेन) - घमंड में भरा हुआ या फूला हुआ। हेकड़ी के साथ, अकड़कर, इठलाकर या रोब के साथ जब आडम्बरपूर्वक कोई बात कही जाती है तो उसे साटोप कथन कहते हैं।

1. निम्नप्रकार के उदाहरण देखें, समझें व याद करें-

हन्तुम्	इच्छा	जिघांसा
पातुम्	इच्छा	पिपासा
भोक्तुम्	इच्छा	बुभुक्षा
ज्ञातुम्	इच्छा	जिज्ञासा
कर्तुम्	इच्छा	चिकीर्षा
श्रोतुम्	इच्छा	शुश्रूषा
द्रष्टुम्	इच्छा	दिदृक्षा

2. विशेष:-

- स्वभाषायां समानार्थकप्रयोगमन्विष्यत-जिह्वां चालयति।
- चायपेयस्य नास्ति काऽपि कथा।
- किमिदानीं महादेव्याः प्रभातकालो न सज्जातः।
- अहो एतावांस्तव साहसः।

अध्येतव्यः ग्रन्थः-

चतुष्पथीयम्- अभिराज राजेन्द्रमिश्रः, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद।